Journal of East-West Thought
ISSN: *2168-2259 (online)*
(https://jetjournal.us/)
Volume 15, Issue 1, Jan-March – 2025 Special Issue 1
Impact Factor: 7.665, Peer Reviewed and UGC CARE I

हिंदी की महिला उपन्यासकार मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में चित्रित महिलाओं का आर्थिक संघर्ष

डॉ. वसीम मक्राणी, जी. टी. पाटील कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय, नंदुरबार

प्रस्तावना

मैत्रेयी पुष्पा हिंदी साहित्य की एक प्रतिष्ठित लेखिका हैं, जो विशेष रूप से अपनी सामाजिक और स्त्रीवादी रचनाओं के लिए जानी जाती हैं। उनका लेखन ग्रामीण भारत की महिलाओं के जीवन, उनकी समस्याओं, संघर्षों, और उनके अधिकारों पर आधारित है। उनकी कहानियाँ और उपन्यास समाज के पितृसत्तात्मक ढांचे को चुनौती देते हुए महिलाओं के स्वाभिमान और स्वतंत्रता की बात करते हैं। मैत्रेयी पुष्पा का लेखन प्रगतिशील है और ग्रामीण जीवन के यथार्थ को बेहद सजीवता से प्रस्तुत करता है। उनकी रचनाएँ महिलाओं की अंदरूनी और बाहरी लड़ाइयों को गहराई से चित्रित करती हैं। वे सामाजिक अन्याय, जातिगत भेदभाव, और स्त्रियों के प्रति हिंसा जैसे मुद्दों पर मुखर होकर लिखती हैं। भाषा में सहजता और प्रवाह है, जो पाठकों को उनकी रचनाओं से जोड़ता है।

समाज में निवास करने वाले मनुष्यों की उन्नति आर्थिक विकास पर निर्भर होता है। प्रत्येक मनुष्य का संघर्ष रोटी, कपड़ा व मकान की प्राप्ति के लिए होता है। स्वतंत्रता से पहले देश का आर्थिक विकास अंग्रेजों के अनुसार हुआ। जिसका परिणाम देश का आम आदमी शोषित पीड़ित बनकर रहा। स्वतंत्रता के बाद आर्थिक विकास का दायित्व अपने देश के लोगों के हाथों में आया परन्तु जिस प्रकार से देश का विकास जन-समुदाय का होना चाहिए था, वह नहीं हुआ। सर्वहारा, किसान, मजदूर वर्ग की जितनी उन्नति होनी चाहिए थी उतनी नहीं हुई।

संबोध शब्द

उन्नति, आर्थिक विकास, निर्भर, दायित्व, कल्याणकारी योजना, आजादी, मुद्रा, संकल्प, आर्थिक विषमता, स्वार्थी मानसिकता एवं सामाजिक व्यवस्था आदि।

विषय प्रवेश

मैत्रेयी पुष्पा का जन्म अलीगढ़ जिले के सिकुर्रा गाँव में हुआ था । उन्होंने अपना बचपन और शुरुआती साल झाँसी के पास बुंदेलखंड के एक अन्य गाँव खिल्ली में बिताए। उन्होंने झाँसी के बुंदेलखंड कॉलेज से हिंदी में स्नातकोत्तर किया। मैत्रेयी पुष्पा का साहित्य हिंदी साहित्य में नारीवाद की मजबूत आवाज़ के रूप में देखा जाता है। उनके द्वारा उठाए गए सामाजिक मुद्दे और महिला पात्रों की सशक्तता नई पीढ़ी के लेखकों और पाठकों को प्रेरणा देती है। उनके उपन्यासों में 'इदन्नमम', 'चाक', 'अलमा कबूतरी', 'झूलानट', 'कस्तूरी कुंडल बसै' एवं 'त्रिशंकु' आदि काफी चर्चा में रहे है।

आजादी के बाद अर्थ प्राप्ति के लिए सामान्य आदमी ने भयंकर संघर्ष किया। देश की आर्थिक बागडोर स्वार्थी मानसिकता के कारण साहूकारों, पूँजीपतियों को अधिक लाभ पहुँचाया जिसका परिणाम यह हुआ कि देश में आर्थिक विषमता बढ़ती चली गयी। जिसके कारण आम आदमी का हाल खराब हो गया। भारत की समाज व्यवस्था में पुरुष को मुखिया समझा जाता था। स्त्री को कमाने का कोई अधिकार नहीं था। स्त्री सदियों से मुखिया पर निर्भर रही आज भी कमोवश उसकी यही स्थिति है यदि स्त्री का मुखिया या पति का देहान्त

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved

Journal of East-West Thought
ISSN: *2168-2259 (online)*
(https://jetjournal.us/)
Volume 15, Issue 1, Jan-March – 2025 Special Issue 1
Impact Factor: 7.665, Peer Reviewed and UGC CARE I

हो जाता है तब उसको आर्थिक संकटों का सामना करना पड़ता है। यद्यपि वर्तमान में इन स्थितियों में बदलाव आया है। अब उसे धन प्राप्ति, नौकरियों आदि का ज्ञान हुआ। जिसके कारण स्त्री आत्मनिर्भर बनने के लिए आगे बढ़ाने लगी है। उसकी इसी मानसिकता के कारण स्त्री को सर्वप्रथम पारिवारिक संघर्ष का सामना करना पड़ता है।

कामकाज पर जाने वाली स्त्रियों पर मानसिक, आर्थिक, यौवन शोषण आदि का सामना करना पड़ता है। यद्यपि वर्तमान युग की स्त्री इसका मुंहतोड़ जवाब देने लगी है। ग्रामीण व शहरी स्त्रियों की समस्या भिन्न है। ग्रामोण स्त्रियों अनपढ़, अज्ञानी है जिनको अपने अधिकारों व सरकारी योजनाओं की जानकारी नहीं होती है जिसके कारण उनको साहूकारों, मालिको, ठेकेदारों के चंगुल में फंस जाती है। यह प्रक्रिया उनके जीवनपर्यंत चलती रहती है।

मैत्रेयी पुष्पा ग्रामीण पृष्ठभूमि पहाड़ियों, आदिवासी, ग्रामीण अंचलों के जीवन मान को साहित्य में प्रमुखतः से स्थान दिया है। मैत्रेयी पुष्पा के कुल उपन्यासों के स्त्री पात्र या पुरुश पात्र दरिद्रता, शोषण, गरीबी के कु-चक्र में पिसते व फंसते रहते हैं। उनको कोई आर्थिक सहायता, न कोई साधन मिलते है जिसके कारण वह लाचार रहते हैं। उनको उपन्यासों में स्त्रियों की स्थिति बड़ी ही खराब है क्योंकि उसका समाज और परिवार में कोई स्वतंत्र अस्तित्व नहीं है, परिवार का मुखिया तथा पति को अर्थ नीतियों के तले दबी कुचली रही है। यद्यपि स्त्री आधे हिस्से की अधिकारी होती है फिर भी वह अर्थ क्षेत्र से उसका दूर-दूर तक करते पकड़े जाते तो कपड़े स्त्रियों के उत्तरे जाते है। उनका किसी भी चीज से संबंध नहीं रहने दिया आता।

स्त्रियों की परावलंबिता का लाभ उठाकर उसको मूलभूत सुविधाओं से दूर रखकर उसको फटेहाल जीवन के लिए मजबूर किया जाता है। यद्यपि स्त्री वर्तमान समय में परम्परागत अर्थ नीतियों को तार-तार कर स्वयं जानने पहचाने लगी है। मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों के स्त्री पात्र ग्रामीण पृष्ठभूमि के होते हुए भी आर्थिक शेषण के खिलाफ दो हाँथ करते हैं।

'अल्मा कबूतरी'

'अल्मा कबूतरी' उपन्यास में नायिका बुनियादी सुविधाओं से दूर है । उसका प्रकाश के द्वारा उपहार स्वरूप दी गयी हवा, पानी, पर भी इनका कोई प्रकार का अधिकार नहीं। कदमबाई का बेटा राणा अपनी माँ से पूछता है कि उसका स्थायी निवास कहाँ है, उस पर कदम नाई जवाब देती है, "पगले गाय-भैस बसावटो की निशानी होती है और हमारी जिन्दगी खरपतवार, कञ्जा, लोग उखाड़ने पर अमादा होते रहते हैं। देखता नहीं पुलिस पौटने आ जाती है, ठेके वाले वे बात ही हमें खदेड़ते है। पर बेटा हम भी कम नहीं, भूखे-प्यासे भी तोपखाने लूटने से बाज नहीं आते।"[१] कबूतरबाजो की स्त्रियों धन व रोटी के लिए कज्जाओं के बिस्तरो पर सोने के लिए मजबूर है।

लेखिका इनकी आर्थिक स्थिति के बारे में लिखती है "हमारे लिए वह ऐसे छापामार गुरिल्ले हैं जो हमारी असावधानियों की दरारों से झपट्टा मारकर वापस अपनों दुनिया में जा छिपते है। कबूतरा पुरुष या तो जंगल में रहते है या जेल में स्त्रियों शराब की भट्टियों पर हमारे बिस्तरों पर। कबूतरा जाति की स्त्रियों का संघर्ष अनोखा है। उनको कोई वस्तु सहजता से मिलती नहीं हैं। उनको आज का पता है परन्तु कल क्या होगा इसका उनको ज्ञान नहीं है। कबूतराओं का अर्थसम्बन्धी स्थिति कमजोर है। वह शराब बनाना, चोरी व लूटमार करना उनके जीवन का हिस्सा है। यदि कोई पुरुष चोरी या लूटमार ठेकेदार, जमींदार पुलिस इन्हें लूटने को हमेशा तैयार रहा है। स्त्री पितृसत्तात्मक आर्थिक नीतियों के कारण रहते हैं। कदमबाई अपनी मजबूरी को

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved

Journal of East-West Thought
ISSN: *2168-2259 (online)*
(https://jetjournal.us/)
Volume 15, Issue 1, Jan-March – 2025 Special Issue 1
Impact Factor: 7.665, Peer Reviewed and UGC CARE I

बताती है "जिंदगी बचाने की कीमत पैसा मुखिया घबरा रहा है आदमी जेल में बंद हो गये तो चोरी कौन जाएगा। पुलिस औरतों को पीटकर घर जाएंगी, दारू कैसे ढलेगी। डेरे का हर आदमी बिना खाये सडे केकड़े-सा।"[२]

'इदन्नमम'

'इदन्नमम' की स्त्री पात्र मंदाकिनी आर्थिक, अत्याचार व अन्याय जैसे शोषण का मुकाबला डटकर करती है तथा लोगों को संगठित करती हुई कहती है, "जागो रे जागो! से जागो रे जागो! चेतो रे येतो! छोटे-बड़े, नन्हें-मुन्ने, बूढ़े पुराने, नये जवानों के अलावा वोर-चोपे, परेवा-पछी, नदी लाल, पेड़ रुख, हवा-पानी, यहाँ तक की दशों दिशाओं को जागना होगा, बचने बचाने को जूझना होगा। अमीर-गरीब, शत्रु-मित्र सबको शामिल होना होगा। इस यज्ञ में समय पड़े तो समिधा सामग्री भी बनाना होगा। बात होम को है, बात आन्दोलन की है।"[३]

इसप्रकार मंदा मजदूरों को सतर्क करने का प्रयास करती है। मंदा एक-एक रुपया जोड़कर ट्रैक्टर लेती है और मजदूरों को रोजगार देती है इसको देखकर लोग आश्चर्यचकित होते है, "अचरज है! आश्चर्य। प्रधान पुरुश पर विश्वास नहीं बच रहा है कि मंदा मर-घर डोल रही है। हवेली फैला रही है। भिखारिनों की तरह। झोली पसारे टूकर-द्वार और लोग डाल भी रहे है। नोटों का अकाल है गांव में मगर जीवन भर की बचाई-खुचाई सेती-जोड़ी हुई पूँजी, छोटे-मोटे गहने गुरियों के रूप में धरी है मुंदरी, नल, तिदाना, लड़ी, युद्ध पाजेब, करधनी तक बचे है जनमानसों के पास बचे है। स्त्री में सेतने की कितनी बड़ी क्षमता होती है. देखते है। इस प्रकार मंदा स्वयं प्रयास करती है तथा दूसरों को भी अपने प्रयासों का हिस्सा बनाकर अन्यायी अभिलाश सिंह व क्रेशर ठेकेदार के खिलाफ जंग छोड़कर उनको पटकनी भी देती है। "काम करने वाली औरते असंगठित क्षेत्रों में सस्ता श्रम बेचने को बाध्य है और निकृष्टतम कोटि की उजरती हुई गुलाम है। मुख्यतः मध्यम वर्ग और अन्य सम्पत्तिशाली वगौ की स्त्रियों और सामान्यतः सभी स्त्रियां वहीं घरेलू दासता से पूर्णतः मुक्त नहीं हो सकी है।"[४]

समय परिवर्तन के साथ स्त्री के कार्यों में बदलाव आ रहे है। उसका आत्म सम्मान उठ खड़ा हो के मिली परावलंबिता को त्याग आत्मनिर्भर बनने की ओर अग्रसर है। 'गुनाह बेगुनाह' उपन्यास की स्त्री पात्र इला चौधरी आत्मनिर्भरता का जीवन जीने के लिए पारिवारिक, सामाजिकता, के बंधन को तोड़कर पुलिस में भर्ती होती है। इला जब अपने घर से भागती है तब उसका एक ही मूल उद्देश्य सम्मानपूर्वक जीने की "भागने के मूल में क्या था वह थी लड़की की लालसा। अच्छा खाने की नहीं, रेशमी कपड़ों की नहीं, गहने जेवर की नहीं, मौज-मस्ती की नहीं, साधन-सुविधा की नहीं, प्रियतम पति की नहीं, संरक्षण सुरक्षा की नहीं बस वह अपने बूते सम्मानपूर्वक जीने की लालसा तय करें।"[५]

उपन्यास की अन्य पात्र समीना के द्वारा पुलिस की नौकरी तथा निकाह करती है। समीना संघर्षशील, दृढ़ता का परिचय देती है। उपन्यास में लक्ष्मी मैडम इन्स्पेक्टर है वह समीना जैसी स्त्रियों के लिए कहती है तुम लोग नये जमाने की औरतों के रूप में उभर रही हो। पहले कमाने का जिम्मा मर्द का होता था अब औरत भी अपने पाँव पर खड़ी हो रही है लेकिन उसे खड़ी रहने देने कहाँ है। इस प्रकार मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों के

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved

Journal of East-West Thought
ISSN: *2168-2259 (online)*
(https://jetjournal.us/)
Volume 15, Issue 1, Jan-March – 2025 Special Issue 1
Impact Factor: 7.665, Peer Reviewed and UGC CARE I

पात्र अपने पैरों पर खड़े होने के लिए परिवार, समाज, धर्म आदि से लड़ती-झगड़ती है और अपगे की ओर अग्रसर होती है।

मजदूरों का आर्थिक शोषण के साथ उसकी स्त्रियों का यौन शोषण भी किया जाता है। तुलसी कहती है, "अरे हमारी ये बेबसी है ठेकेदार। हमें पेट के मारे दिन में ही पथरा नहीं तोड़ने पड़त रात में देह भी हमे बिना रौंदे-चिथे तुम्हारी बिरादरी के लोग पत्थरों से हाथ नहीं लगाने देते और जनी की जात मरद बिरोबर काम नहीं कर पाती सो सहद के छता के तरह निचोत है मालिक लोग।"[६]

मैत्रेयी पुष्पा की आत्मकथा 'कस्तूरी कुंडल बसै' में भी कस्तूरी पुरुषी व्यवस्था द्वारा स्त्री के होने वाले आर्थिक, शारीरिक शोषण का विरोध करती है। मैत्रेयी पुष्पा के स्त्री पात्र, पुरुषी मुखिया, ठेकेदारों, जमीदारी, सरकार के द्वारा मजदूरों, भूमिहीन किसानों के होने, आर्थिक शोषण का विरोध करते है। आदिकाल से परिवार का गृह स्वामित्व पुरुष बनाया गया तथा स्त्री को परावलंबी बनाया गया। जर, जोरू, जमीन पर पुरुष का अधिकार रखा गया। पति की मृत्यु के बाद जमीन का मालिक स्त्री के बेटा को बनाया जाता रहा है। उसकी हालत 'पराधीन सपनेहु सुख नाहीं' की तरह रहती है।

'गुनाह बेगुनाह'

'गुनाह बेगुनाह' उपन्यास में एक विधवा स्त्री अपने पति की जमीन जायदाद का अधिकार मांगती है। विधवा कहती है "मैं विधवा औरत हूँ। पति आया था थाने देखा होगा। मैं, विधवा के बाद सुहागिन हूँ, आप जानती होंगी, जर, जोरू, औरत बिना मालिक के लावारिस मानी जाती है। मालिक होता है घर का मर्द, औरत विधवा होती है तो उसका बेटा मालिक हो जाता है।"[७] मैत्रेयी पुष्पा के स्त्री चरित्र बदलाव की सुगबुगाहट देते हैं, गाँव की अनपढ़ स्त्रियों, गाँव का गंवार जमीन जायदाद की हकदारी के लिए प्रतिरोध कर समाज में बदनाम हो रही है। लेकिन अपना हक पाने के पश्चात् ही दम लेती है।

आज के दौर में स्त्री नौकरी करके अपने आपको आत्मनिर्भर बना रही है। युवा पत्रकार मनीशा घर की देहरी लांगकर स्वावलंबी हो रही है, उनके लिए विवाह से करियर कहीं अधिक महत्वपूर्ण है वे किसी बंधन में बंधकर अपना करियर तबाह नहीं करना चाहती, बुलंदी पर जाने या प्रतियोगिता में अव्वल रहने के लिए अकेले रहना ज्यादा पसंद करती हैं। मैत्रेयी पुष्पा ने गुनाह बेगुनाह में कामकाजी स्त्रियों का संघर्ष दिखाया है। उपन्यास की स्त्री पात्र समीना, इला चौधरी, प्रिया घर, परिवार की दीवारों को पार कर मर्यादाओं को तोड़कर पुलिस विभाग में भर्ती होती है।

घर में रात-दिन काम करने वाली स्त्री को श्रम के साथ नहीं जोड़ा जाता, बल्कि उनके कार्यों को कर्तव्य के साथ जोड़ा जाता है। गृहस्थी के कामों के लिए वेतन तय किया जाना बाहिए। जिसके लिए पूंजीवादी व्यवस्था कभी तैयार नहीं होती। घर में रहने वाली महिलाओं का श्रम सीधे घर से बाहर अर्जित की गई उत्पादन क्षमता से जा जुड़ता है बच्चे पैदा कर उन्हें बढ़ाकर इस लायक बनाती है कि वह पर का भरण पोषण कर सके। यानी उत्पादन के लिए अगली पीढ़ी को तैयार करती है। इस प्रकार वह अपने घर के श्रम द्वारा बाहर अर्जित किये श्रम से सीधे जोड़ती है।

निष्कर्ष

१. मैत्रेयी पुष्पा हिंदी साहित्य की एक प्रतिष्ठित लेखिका हैं, जो विशेष रूप से अपनी सामाजिक और स्त्रीवादी रचनाओं के लिए जानी जाती हैं।

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved

Journal of East-West Thought
ISSN: *2168-2259 (online)*
(https://jetjournal.us/)
Volume 15, Issue 1, Jan-March – 2025 Special Issue 1
Impact Factor: 7.665, Peer Reviewed and UGC CARE I

२. मैत्रेयी पुष्पा का लेखन ग्रामीण भारत की महिलाओं के जीवन, उनकी समस्याओं, संघर्षों, और उनके अधिकारों पर आधारित है।
३. मैत्रेयी पुष्पा की कहानियाँ और उपन्यास समाज के पितृसत्तात्मक ढांचे को चुनौती देते हुए महिलाओं के स्वाभिमान और स्वतंत्रता की बात करते हैं।
४. मैत्रेयी पुष्पा घरेलू स्त्रियों को कामकाज या वेतन मिलना चाहिए इस बात की वकालत करती है। मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में ऐसे अनेक स्त्री चरित्र आये हैं।
५. मैत्रेयी पुष्पा के सभी उपन्यास स्त्रियों के आर्थिक संघर्ष को उजागर करती है। स्त्री आर्थिक पराधीनता का ऐसा चित्र मैत्रेयी पुष्पा दिखाती है जिसको देखकर व्यक्ति विचारशील बनने के लिये बाध्य हो जाता है।
६. वर्षों से स्त्री पुरुष पर निर्भर रही तथा पाई-पाई के लिये तरसती रही है। पुरुष मानसिकता व शिक्षा के अधिकार को जब तक हर एक स्त्री के लिये जरूरी नहीं बनाया जायेगा तब तक स्त्री के मूलभूत अंतर आना सम्भव नहीं है।
७. यद्यपि मैत्रेयी पुष्पा के स्त्री पात्रों के आर्थिक संघर्ष के रूप में आत्मनिर्भरता के लिये प्रयास अत्यधिक प्रेरणादायी है।

संदर्भ ग्रंथ

१. पुष्पा मैत्रेयी, 'अल्मा कबुतरी', पृ. क्र. १६
२. वही पृ. क्र. ५६
३. पुष्पा मैत्रेयी, 'इदन्नमम', पृ. क्र. २८
४. वही पृ. क्र. ३६
५. पुष्पा मैत्रेयी, 'गुनाह बेगुनाह', पृ. क्र. ५९
६. वही पृ. क्र. ७२
७. पुष्पा मैत्रेयी, 'गुनाह बेगुनाह', पृ. क्र. ३३

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved